Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

नरेश मेहता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

Anita Khatana[1]* Dr. Madhubala Sharma[2]

[1] Research Scholar, Sunrise University, Alwar

[2] Dean - Administration, Sunrise University, Alwar

सार - ***साहित्यशास्त्र में उपन्यास और कहानी के छः तत्व माने गये हैं। किसी उपन्यास की समीक्षा करते समय या उसके विषय में बातें करते समय इनका विवेचन काम में आता है, ये तत्व - कथानक, पात्र, संवाद, देशकाल, भाषा और शैली तथा उद्देश्य हैं। कथानक उस सामग्री का नाम है जिसे लेखक जीवन से चुनता है, जिसे पात्र, क्रिया व्यापार और घटनाओं के संबंध में निरूपित किया जाता है। पात्र या चरित्र वे व्यक्ति हैं, जिनके द्वारा घटनाएँ घटती हैं। उपन्यास जगत में पात्रों के मध्य बातचीत को कथोपकथन या संवाद कहते हैं। देशकाल से अभिप्राय उस काल और स्थान विशेष से रहता है, जिसका आधार उपन्यास का कथानक अथवा वस्तु-विन्यास ग्रहण करता है। भाषा और शैली उपन्यासकार की अभिव्यंजना पद्धति होते हैं तथा रचनाएँ किसी-न-किसी उद्देश्य की पूर्ति अवश्य करती हैं। "उपन्यास के विवेचन में उपन्यास की प्रविधि या शिल्प (टेकनीक), कथावस्तु (प्लाट), चरित्र-चित्रण, संवाद, शैली, देशकाल वातावरण, उद्देश्य आदि शब्द औपन्यासिक अवधारणाएँ हैं, जिनके निश्चित अर्थों के अभाव में उपन्यास का व्यवस्थित संतुलित और स्पष्ट विवेचन संभव नहीं है। नरेश मेहता उपन्यासकारों के रूप में पर्याप्त चर्चित एवं ख्यातिलब्ध रहें हैं। नरेश मेहता आधुनिक उपन्यासकारों में विशेष महत्व रखते हैं, वे व्यक्तिवादी उपन्यासकार हैं। अपनी कई विशेषताओं के कारण श्री नरेश मेहता ने नई पीढ़ी के उपन्यासकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सन् 1950-60 तक का हिन्दी गद्य रूमानी मानसिकता से मुक्ति और आधुनिकता के स्वीकार की संक्रमण कालीन चेतना का गद्य है तथा नरेश मेहता में इसी काल की चेतना परिलक्षित होती है।***

कीवर्ड - ***नरेश मेहता, सामाजिक उत्थान***

-------------------------------- x --------------------------------

परिचय

जन्म एवं परिवार:

साहित्य के सजग शिल्पी तथा साहित्य को अन्वेषण की प्रक्रिया मानने वाले आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ साहित्यकार एवं आधुनिक हिन्दी को कवि, कथाकार, गीतकार, नाटककार, पत्रकार तथा चिंतक के रूप में अपना प्रदेय सौंपने वाले श्री नरेश मेहता का जन्म 15 फरवरी, 1922 ई. में मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र के शाजापुर कस्बे में एक निम्न मध्यमवर्गीय वैष्णव परिवार में हुआ। नरेश जी का पारिवारिक नाम पूर्णाशंकर था, जो बाद में नरसिंहगढ़ की राजमाता के द्वारा दिये गये नाम नरेश के कारण नरेश मेहता हो गया।

नरेश मेहता के पितामह पं. मोतीराम एक पुरुषार्थी व्यक्तित्व के धनी थे। इनके तीन पुत्र पं. बिहारीलाल, पं. शंकरलाल और पं. रामनारायण और एक पुत्री थी। नरेश मेहता के पिता पं. बिहारीलाल को संतान के लिए तीन बार विवाह करने पड़े थे।

पहली पत्नी निःसंतान ही मर गई दूसरी पत्नी से एक कन्या का जन्म हुआ जिसका नाम शांति था और तीसरे विवाह से पुत्र नरेश जी का जन्म हुआ। बालक नरेश के जन्म के डेढ़ वर्ष पश्चात् ही उनकी माता जिनका नाम सुन्दर बाई था का स्वर्गवास हो गया था।

तीन-तीन पत्नियों को खोकर पुत्र की प्रप्ति से पिता में एक अजीब संकुल भाव होना स्वाभाविक ही था। बड़े काका पं. श्री शंकरलाल जी धार राज्य में हेडमास्टर थे; बाद में डिप्टी कलेक्टर हो गये थे। उन्होंने ही बालक नरेश को अपने पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया और 3-4 वर्ष की उम्र में ही नरेश जी अपने चाचा के पास चले गये थे।

नरेश जी के पिता एक साधारण नौकरी में थे, वे रजिस्ट्रार थे और नीरसतापूर्ण जीवन जी रहे थे, वहीं पुत्र के प्रति दायित्व-विहीन भी होते चले गये। चाचा पं. शंकरलाल जी के पास अत्यधिक सम्पन्नता थी, हर सुख- साधन, भौतिक भोग विलास सब कुछ था, नहीं थी तो पारिवारिक उष्मा। इसी

अपनत्व की ऊष्मा के अभाव ने नरेश जी को काफी हद तक निष्ठुर बना दिया था। परिवार के नाम पर नरेश जी के हिस्से केवल अभाव ही आया। मातृत्व तथा पिता का वात्सल्य दोनों ही भावनाओं से नरेश जी अनभिज्ञ रहे। जिनसे उन्हें अपनत्व मिला वह था, दादा की बहन का परिवार। "परिवार व्यक्ति को समझदार बनाता है, यही समय जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रारंभिक काल भी है। परिवारहीनता की स्थिति में यह स्वाभाविक था कि नरेश जी प्रेरणा के स्रोत बाहर अन्य-परिवारों में ढूँढ़ते। जिस परिवार से उन्हें यह प्रेरणा प्राप्त हुई, उनके प्रति वे जीवन भर कृतज्ञ रहे। शाजापुर का भट्ट परिवार भी ऐसा ही परिवार था, पितामह की बहन का परिवार। घर से बिल्कुल लगा हुआ, जहाँ दादा (श्री नंद किशोर भट्ट) और भाभी से उन्हें बेहद आत्मीयता थी।"[1]

नरेश मेहता का विवाह इलाहाबाद के रहने वाले पं. श्री सत्यनारायण व्यास जी की बेटी महिमा, जो बहुत ही साधारण एवं संस्कारी परिवार से थी, के साथ हुआ। विवाह से पूर्व लखनऊ के कालखण्ड में नरेश जी का प्रेम प्रसंग चल रहा था। प्रेम विवाह की मंजिल तक न पहुँच सका और किसी गलतफहमी का शिकार होकर उस महिला ने आत्महत्या कर ली। जिसके आघात से नरेश जी आपादमस्तक हिल गये थे। महिमा जी विवाह के पूर्व कानपुर में स्नातक कक्षाओं में समाजशास्त्र की प्राध्यापिका थीं; परन्तु विवाह के बाद उन्होंने अपने प्राध्यापक पद से त्यागपत्र दे दिया और प्रेरणामयी पत्नी बनकर संघर्ष के हर क्षणों में नरेश जी का साथ दिया, उनमें आत्मविश्वास जगाया।

महिमा मेहता जी ने एक पुत्र बाबुल (ईशान) और 5 वर्ष बाद दूसरी संतान कन्या बुलबुल (वान्या) को जन्म दिया। दोनों ही बच्चे पढ़ाई में सदैव प्रथम स्थान ही प्राप्त करते थे। परिवार पर नरेश जी के व्यक्तित्व की छांव थी। वान्या का विवाह मुम्बई में निवासरत् बोरा परिवार के लड़के सुधीर बोरा परिवार में सम्पन्न हुआ और बाबुल का विवाह भी एक अच्छे संस्कारी परिवार की कन्या वन्दना से हुआ।

नरेश जी ने जीवन-संघर्ष के कई तपते कड़े कोस तय किये और अन्ततः उन्हें राहत भी मिली, परन्तु अचानक परिवार में एक दुखद घटना घटी और नरेश जी को मौन कर गयी, वह घटना थी, बेटे बाबुल के न रहने की। 13 जून 1988 में विवाह के मात्र डेढ़ महीने बाद बाबुल की एक कार दुर्घटना से असामयिक मृत्यु हो गयी और प्रशान्त तेजोमय व्यक्तित्व वाली नरेश जी की पुत्र-वधु वन्दना विधवा हो गया

शिक्षा-दीक्षा:

नरेश जी की छठीं तक की पढ़ाई चाचा के यहाँ 'धार' में हुई। वे अपने चाचा के साथ केवल छठीं कक्षा तक रह सके, क्योंकि बाद की पढ़ाई उस कस्बे में नहीं होती थी। फिर वे आगे की पढ़ाई के लिए अपनी बुआ के यहाँ नरसिंहगढ़ भेज दिये गये। वहीं रहकर उन्होंने आगे की कक्षाएँ उत्तीर्ण की। पालन-पोषण का सारा खर्च चाचाजी ही वहन करते थे।

नरेश जी के आस्थावान पिता ने उन्हें आगे पढ़ाई के लिए नरसिंहगढ़ से उज्जैन भेज दिया। जहाँ उनके चचेरे भाई श्री नंदकिशोर भट्ट रहा करते थे, उन्हीं के साथ रहकर नरेश जी ने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। तथा वहीं रहकर इण्टरमीडिएट की परीक्षा भी तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। आगे की पढ़ाई के लिए नरेश जी ने काशी को चुना जहाँ उन्होंने बी.ए. की तथा एम.ए. हिन्दी साहित्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद बनारस जाकर वहाँ रहकर हिन्दी साहित्य में शोधकार्य भी प्रारंभ किया, जो कुछ कारणों से अधूरा ही रह गया था। उसके बाद बनारस के 'आज' अखबार में कुछ दिन काम किया, पर वह भी रास नहीं आया और उन्होंने बनारस को अलविदा कह दिया।

नरेश जी के जीवन का आरंभ एक प्रकार से सन् 1948 में लखनऊ के ऑल इंडिया रेडियो में कार्य की शुरुआत से हुआ। वे सन् 1948 से 1953 तक रेडियो कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कार्यरत् रहे। सन् 1954 से 1959 तक मुख्य रूप से दिल्ली में अपने चचेरे भाई नंद किशोर भट्ट के साथ रहे और कुछ छोटे-मोटे काम भी किये, पर सफल नहीं रहे फिर दिल्ली छोड़कर नरेश जी इलाहाबाद चले गये और इलाहाबाद को ही उन्होंने अपना अध्ययन केन्द्र बनाकर अपनी सृजनात्मक क्षमता पर बल देते हुए अपने जीवन को सृजनात्मक धरातल पर उतारा और फिर हिन्दी साहित्य जगत् के लिए निर्मित हुआ एक कवि, कथाकार, गीतकार, नाटककार, कहानीकार और पत्रकार।

बाहय एवं आन्तरिक व्यक्तित्व:

खुशमिजाजी-औत्सविक मानसिकता वाले श्री नरेश जी का व्यक्तित्व बहुत ही गहरा एवं आर्कषक था। नरेश जी के

जीवन के ऐसे कई मोड़ हैं जिनसे उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ और प्रभावशाली भी बना।

नरेश जी श्याम वर्ण के थे, आँखें अपेक्षाकृत छोटी, तेज, निश्छल और चमकीली थीं जो सामने वाले को सम्मोहित करती थीं। बचपन में ही मातृहीन होने पर उनका शरीर रोगी था, परन्तु उनके पैर हिरण की तरह मजबूत थे, वे सभी प्रकार के खेल-खेलने में निपुण थे। नरेश जी बहुत ही करीने से कपड़े पहनते थे। बहुत ही अच्छी तरह से अपने केश संवारते थे, अच्छा और थोड़ा भोजन करते थे। वे खाने-पीने के बहुत शौकीन थे। ट्रेन में सदैव वातानुकूलित या प्रथम श्रेणी में ही चलते थे। नरेश जी चाय तो पीते ही थे, सिगरेट और पान का भी शौक था। नरेश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनको संगीत, खासकर शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य में अत्याधिक रुचि थी। नरेश जी के स्वभाव में एक अजीब-सा विरोधाभाव था। वे ऊँच-नीच और जातिगत भेदों से बहुत परे थे।

प्रारंभ में नरेश जी बहुत ही क्रोधी स्वभाव के थे, परन्तु विवेक ने उन्हें सदा संतुलित रखा। नरेश जी का जीवन प्रारंभ में चाचा के संरक्षण में सुख-सुविधाओं के बीच बीता, परन्तु चाचा से कभी अपनापन और प्रेम नहीं मिला। ना ही पढ़ने-लिखने में उनकी रुचि उत्पन्न हुई। चाचा के कठोर अनुशासन ने उन्हें काफी हद तक विद्रोहवादी भी बना दिया था, जिससे उनका व्यक्तित्व अन्तर्मुखी होकर कड़ुवाहट से भर गया था। "प्रारंभ के दिन सुख और सुविधाओं से भरे थे, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ पहले सुविधाएँ तिरोहित होने लगी और फिर सुख भी बीत गया। परिवार के नाम पर उनके हिस्से अभाव ही आया। फलस्वरूप प्रारंभ से ही व्यक्तित्व अन्तर्मुखी हो गया। उस अन्तर्मुखी किशोर को न परिवार का गणित समझ आया और न ही स्कूल का। दोनों ही गणित से उन्हें घृणा हो गई जिसने उनके व्यक्तित्व में कड़ुवाहट भर दी और वह कड़वाहट नरेश जी के जीवन का अंग बन गयी।"[2]

चाचा के संरक्षण में नरेश जी के भीतर एक खर्चीला सामन्ती स्वभाव भी निर्मित हो चुका था, वे शाहखर्ची बन गये थे; क्योंकि चाचा के साथ, उनके वैभव सम्पन्न वातावरण ने उन्हें उस प्रवृत्ति का बना दिया था। स्वाभिमान उनमें कूटकूटकर भरा हुआ था, परन्तु वे अभिमानी बिल्कुल नहीं थे। नरेश जी के व्यक्तितत्व में गहरी कल्पनाशीलता भी थी। वे कहते थे– "मैंने कभी समकालीनता की चिन्ता नहीं की तो समकालीनता मेरी चिन्ता क्यों करे। वे कहते थे, मैं जिद्दी हूँ लेकिन मेरी जिद्द वैसी है जैसी पत्थर को तरासने वाले पानी की जिद्द होती है।

नरेश मेहता के पिता पं. बिहारी लाल तथा काका शंकर लाल जी अपने विचार, जीवन शैली और व्यक्तित्वों के दो विपरित ध्रुव थे ये दोनों ही प्रभाव नरेश मेहता पर पड़े। दबंग, वैभव-सम्पन्न, सुसंस्कृत, बहुज्ञ, कविता-कला के प्रति गहरी रुचि रखने वाले चाचा तथा असंग तटस्थ भाव वाले अपने पिता इन दोनों व्यक्तियों का प्रभाव नरेश जी पर रहा। नरेश जी दृढ़संकल्पी तथा बोलने में निर्भीक थे। निर्भयता के अतिरिक्त नरेश जी के चरित्र की एक विशेषता थी उनका संयम, विवेक, धैर्य और प्रतीक्षा। संयम और विवेक उनके लेखन में भी देखा जा सकता है और उनके जीवन में भी। धैर्य और प्रतीक्षा का उदाहरण है उनकी किसी भी रचना पर टी.वी. धारावाहिक का न बनना।

कृतित्व:

आधुनिक भारतीय साहित्य के शीर्षस्थ कवि, कथाकार एवं विचारक नरेश मेहता अपनी सृजनात्मकता एवं पहली तुकबंदी का श्रेय अपनी बहन शान्ति को देते हैं। नरेश मेहता को रचनाकारों की पंक्ति में विशिष्ट स्थान दिलाने का बहुत बड़ा श्रेय पत्नी महिमा जी को जाता है। महिमा जी पति नरेश जी के सर्जनापथ को प्रशस्त करने के लिए कुछ भी करने को तैयार थीं। महिमा जी का सम्बल नरेश जी के लिए सबसे बड़ा सम्बल था।

नरसिंहगढ़ के निवास काल में नरेश जी ने स्कूल पढ़ाई के अतिरिक्त भी बहुत कुछ पढ़ा। "हाई स्कूल के पहले ही उन्होंने 'चन्द्रांता', 'राबिन्सन् क्रूसो', 'युद्ध और शान्ति' तथा 'दो नगरों की कहानियाँ', 'कालिदास', 'सूर' और 'तुलसी' तथा 'महाभारत', 'पुराण' और धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन और श्रवण भी किशोरावस्था में ही किया था। वस्तुतः इससे उनकी रुचि एक ओर परिमार्जित होती गई और दूसरी ओर साहित्य के प्रति रचनात्मकता का भाव भी पैदा करती गयी।"[4] उन्होंने विदेशी उपन्यास भी पढ़े। नरसिंहगढ़ के तालाब के किनारे बहुत से साहित्य को नरेश जी ने पढ़ा, खूब कविताएँ भी लिखी। नरसिंहगढ़ के परिवेश ने ही उन्हें सर्जक बनाया।

दिल्ली के निवास के समय कवि मेहता का संपर्क कुछ विशिष्ट साहित्यकारों से हुआ। संपर्क इनकी साहित्यिक दृष्टि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। अंत में अपने साहित्यिक कृतित्व के लिए उपयुक्त न लगने के कारण इन्होंने दिल्ली छोड़कर, प्रयाग में स्थायी रूप से रहना स्वीकार कर लिया। अंततः इलाहाबाद में जाकर बसने का निर्णय नरेश जी के साहित्यिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय साबित हुआ। शब्द पुरुष अज्ञेय विचार संस्मरण' में

www.ignited.in

नरेश जी ने स्वयं लिखा है – "कुछ दिनों बाद मेरा तबादला नागपुर हो गया। हालांकि लखनऊ से ही मैं जान चुका था कि रेडियो की यह सरकारी नौकरी बहुत नहीं चलेगी और मैं भी कोई बहुत उत्सुक नहीं था। इलाहाबाद के इन वर्षों ने एक प्रकार से मेरा भविष्य तय कर दिया था, कि मुझे सिर्फ लेखक ही बनना है और वह भी इलाहाबाद में रहकर और यह संकल्प अगत्या सन् 1959 में जाकर ही फलीभूत हुआ।"

साहित्यकार नरेश मेहता ने उपन्यासों में जिस समय का वर्णन किया है। तत्कालीन समाज देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत था। उस समय भारतीय समाज राष्ट्रीय प्रेमानुराग एवं आत्मोसर्ग की भावना से भरा हुआ था। समाज में जो साहित्य लिखा जा रहा था वह भी राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत था। साहित्य, अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध चिंगारियाँ उगलने का कार्य कर रहा था। मेहता जी ने उपन्यासों में दिखाया है कि ''छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े तक देशप्रेम के भाव से आप्लावित है।''[13['नदी यशस्वी है' उपन्यास में स्वतंत्रता संघर्ष में युवा वर्ग का राष्ट्रीय प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय युवा वर्ग अपने भविष्य की चिंता छोड़कर स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद गये थे। स्वतंत्रता संघर्ष में स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया अंग्रेज सरकार को हर तरह से परेशान करने का कार्य युवा वर्ग कर रहा था। ''तोरनांद का डाका इन्दौर, उज्जैन घाट के कॉलेजो में पढ़ने वाले बड़े घरों के लड़कों ने देश की आजादी के लिए बम्ब पिस्तौल बनाने के लिए डाला था।''[14] अतः स्पष्ट है कि युवाओं में जो राष्ट्र के प्रति अनुराग, भक्ति, प्रेम जाग्रत हुआ उसी के कारण वे अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष हेतु प्रस्तुत हुए।

भारतीय राजनीति में गांधीजी के प्रवेश ने राष्ट्रीय संघर्ष को और अधिक प्रोत्साहन दिया। लोग गांधी के अहिंसावादी विचारों का समर्थन करने लगे। भारतीयांे ने गांधीजी के मार्ग का अनुसरण किया। 'यह पथ बन्धु था' में स्पष्ट किया गया है मदन मोहन मालवीय जी ने जनसभा को संबोधित किया। ''देश की स्वतंत्रता अंग्रेजों के शासन आदि पर बोलते हुए बताया कि गांधी बाबा ने निःशस्त्र रहकर भी अंग्रेजों की चुनौती देने का यह जो नया रास्ता बनाया है वह है विदेशी माल का बहिष्कार। किस प्रकार जर्मन अपने देश का माल खरीदता है स्वयं अंग्रेज इंग्लैण्ड के माल के अलावा दूसरा माल नहीं खरीदता चाहे सस्ता ही क्यों न हो तब हम भारतीयों को भी चाहिए कि अपने ही देश का माल खरीदे। सबसे ज्यादा जो माल बाहर से आता है वह है कपड़ा। विदेशी कपड़े का व्यवहार करना छोड़ देना चाहिए देश का कपड़ा पहनने से देष के कारीगरों को रोजी-रोटी मिलेगी देश का पैसा देश में ही रहेगा ऐसी स्थिति में हमारी आर्थिक स्थिति सुधरेगी।''[15] अतः विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर राष्ट्र प्रेम अभिव्यक्त किया गया है।

नरेश जी काशी में ऋषिवत् आचार्य केशव प्रसाद मिश्र, पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र तथा आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के वैदिक ज्ञान को प्राप्त करते रहे। इस प्रकार वैष्णव संस्कार तथा शिवत्व एक दूसरे के अपूर्व सम्पर्क से सम्पर्कित हो एक खरे कंचन की तरह औपनिषदिक आशा से स्वरूपित हो उठे। इस तरह मालवा और काशी की सारी स्मृतियाँ नरेश जी की रचनाओं में स्पष्ट झलकती हैं। "नरेश के रहन-सहन, वेशभूषा और काव्य-रचना पर सुरुचिपूर्ण आभिजात्य की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है। वे मालवा के निवासी और काशी के अन्तर्वासी रहे हैं। उनकी रचनाओं में दोनों स्थानों की हल्की अनुगुंज सुनाई पड़ती है।"

प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा और कवि नरेन्द्र शर्मा का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। काशी जाने पर नरेश जी का काव्य-व्यक्तित्व सामने आया साथ ही गद्य लेखन भी विकसित होता रहा। प्रथम उपन्यास 'ट्रेन्चिज के पीछे' लिखा, उपन्यास में व्यक्त उग्र विचारधारा तथा राजनीतिक टिप्पणियों के कारण उस उपन्यास को तात्कालिन अधिकारियों द्वारा जब्त कर लिया गया। नरेश जी ने बंगला साहित्य का भी अध्ययन किया वस्तुतः इन्हें उपन्यास लिखने की प्रेरणा शरत्चन्द जी से ही मिली। नरेश मेहता प्रगतिशील प्रयोगनिष्ठ साहित्यकार है परन्तु वे एक सफल कवि के रूप में अधिक ख्यातिलब्ध रहे हैं – "नरेश मेहता ने भले ही साहित्य की विविध विधाओं के सृजन क्षणों में तन्मयता का अनुभव किया हो, लेकिन उनकी वास्तविक सृजन भूमि गीत और कविता की रही।"

उपसंहार

उपन्यास सबसे पहले कहानी के रूप में आरम्भ हुआ। विभिन्न घटनाओं और कर्मों का वृतान्त और उनका पारस्परिक सम्बन्ध एक प्रकार से आवश्यक था। उपन्यास इसलिए सबसे पहले वृतान्त था। यद्यपि प्राचीन कहानियों में ही उपन्यास के बीज ढूँढे जा सकते हैं किन्तु उपन्यास विधा मुख्यतः आधुनिक सभ्यता की देन है। अनेक उपन्यासकारों पर फ्रायड, एडलर और रंग के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव पड़ा। वस्तुत: मनोवैज्ञानिक स्थापना के साथ ही क्रमश: उपन्यासों में मानव की आन्तरिक प्रवृतियों को प्रधानता मिलती गयी। धीरे-धीरे उपन्यास कला की संरचना में बाह्य घटना और चरित्र का आधार क्षीण होता गया और अनुभूति के आत्मनिष्ठ रूप के

www.ignited.in

आधार पर ही उपन्यासों की रचना की जाने लगी। इस शोध - प्रबन्ध में नरेश जी के उपन्यासों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ-साथ नरेश जी का व्यक्तिगत परिचय, साहित्यिक परिचय व इनके उपन्यासों का कथासार भी विवेचित किया गया है। विषय कथन व विषय के महत्त्व की विवेचना के बाद कथ्य व संरचना से सम्बन्धित व उन्हें प्रभावित करने वाले तत्त्वों का वर्णन किया है।

साहित्यकार का लक्ष्य, जो उचित और योग्य होता है, उसे पाठकों तक पहुँचाना होता है। अत: साहित्य में साहित्यकार या किसी भी लेखक की सम्प्रेषणीय विधि या अर्थ को 'कथ्य' माना गया है। किसी भी कृति की सार्थकता 'कथ्य' की सार्थकता में ही खोजी जाती है। साहित्यकार कुछ प्रेरक प्रवृतियों से प्रेरित होकर 'कथ्य' का चयन करता है। ये प्रेरक प्रवृतियाँ हैं - मानव समाज, उसकी भावनाएँ, जीवन में आने वाली चुनौतियाँ व परिवर्तनशीलता आदि।

कथ्य को व्यक्त करने के लिए इतिहास व दर्शन का मुख्य सहयोग रहता है। इतिहास के लिए सामाजिक घटनाओं और उसकी प्रवृतियों का होना आवश्यक होता है तथा दर्शन का अपने युग की जगता और सत्ता से सबन्ध होता है। कथ्य, कथा, कथोपकथन तथा कथावस्तु को समझने के लिए इनका अलग-अलग विवेचन किया गया है। कथ्य को शिल्प के माध्यम से पाठक तक पहुँचाना ही साहित्यकार का मुख्य उद्देश्य है। पाठक जिस कथ्य को ग्रहण करता है, वही कथ्य

सन्दर्भ

1. मेहता महिमा, उत्सव पुरुष: श्री नरेश मेहता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2003, पृ.सं. 36, पैरा. 4

2. शर्मा विष्णु प्रभा, नरेश मेहता कृत - 'महाप्रस्थान', नयी दिल्ली, आशा प्रकाशन, 1985, पृ.सं. 107, पैरा. 3

3. मिश्र सत्यप्रकाश, माध्यम, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जनवरी-मार्च 2001, पृ.सं. 44, पैरा. 3

4. शर्मा राजकुमार, हिन्दी उपन्यास उद्भव एवं विकास, जयपुर, कालेज बुक डिपो (अप्राप्त संस्करण), पृ.सं. 1, पैरा. 2

5. मेहता नरेश, शब्द पुरुष 'अज्ञेय', इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1989, पृ.सं. 13, पैरा. 1

6. सिंह बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, नयी दिल्ली, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2000, पृ.सं. 436, पैरा. 2

7. शर्मा कुमुद, हिन्दी के निर्माता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2006, पृ.सं. 382, पैरा. 3

8. मेहता महिमा, उत्सव पुरुष: श्री नरेश मेहता, नयी दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2003

9. वही, पृष्ठ संख्या 443

10. नदी यशस्वी है, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 229

11. उत्तरकथा भाग-2, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या 237

12. वही, पृष्ठ संख्या 152

13. कविता भट्ट, अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग, क्लासिक पब्लिकशन, जयपुर 2003, पृष्ठ संख्या 13

Corresponding Author

Anita Khatana*

Research Scholar, Sunrise University, Alwar